NCERT SOLUTIONS

CLASS - 10th

aglasem.com

Class : 10th

Subject : हिंदी

Chapter : 4

Chapter Name : एहि ठैयाँ झुलनी हैरानी हो रामा !

Q1.हमारी आज़ादी की लड़ाई में समाज के अपेक्षित माने जाने वाले वर्ग का योगदान भी काम नहीं रहा है | इस कहानी में ऐसे लोगों के योगदान को किस प्रकार उभारा है ?
Answer.हमारी आज़ादी की लड़ाई में हर वर्ग और हर धर्म ने बढ़-चढ़कर अपना अपना योगदान दिया था | इस कहानी में टुन्नू और दुलारी के योगदान को बताया है | जैसे की दुलारी टुन्नू को देखकर रेशम छोड़कर खुद भी खद्दर धारण कर लेती है, और विदेशी साड़ियों के बंडल को विदेशी वस्तुओं की होली जलने के लिए दे देती है | टुन्नू आज़ादी के लिए निकाले गए जुलूसों में भाग लेते हुए अपनी जान दे देता है | टुन्नू और दुलारी दोनों ही कजली गायक थे फिर भी उन्होंने आज़ादी की लड़ाई में अपना योगदान दिया था | इस कहानी में लेखक ने इस योगदान को बहुत ही अच्छी तरह से उभारा है |
Page no: 41, Block: प्रशन्न अभ्यास

Q2.कठोर हृदयी समझी जाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर क्यों विचलित हो उठी ?
Answer.कठोर हृदयी समझी जाने वाली दुलारी टुन्नू की मृत्यु पर इसलिए विचलित हो उठी क्योंकि दुलारी को अपनी गलती का एहसास हो गया था । वह टुन्नू और उसके प्रेम को बचकाना समझती थी पर बाद में उसको एहसास होता है की टुन्नू का प्रेम सच्चा था | टुन्नू ही एक ऐसा इंसान था जिसने उससे इज़्ज़त से बात की थी और बदले में दुलारी ने उसकी बेज्जती की थी।इसलिए उसने टुन्नू की दी हुई खादी की धोती पहन ली थी और विदेशी धोतियों को होली में जलाने के लिए दे दिया था |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q3.कजली दंगल जैसी गतिविधियों का आयोजन क्यों हुआ करता होगा ? कुछ और परंपरागत लोक आयोजनों का उल्लेख कीजिये |
Answer.पहले कजली दंगल जैसी गतिविधियाँ मनोरंजन का साधन हुआ करती थी | पहले इस तरह के आयोजन बहुत हुआ करते थे जहाँ टुन्नू और दुलारी जैसे लोग कजली गाने के लिए बुलाये जाते थे | इन आयोजनों के माध्यम से लोगों के बीच में देश भक्ति का प्रचार किया जाता था, और इन आयोजनों में लोक गायकी का प्रदर्शन होता था | इस तरह के और परंपरागत आयोजन है- दक्षिण भारत में बैलों का दंगल, उत्तर भारत में कुश्ती, राजस्थान में पशु मेले आदि |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q4.दुलारी विशिष्ट कहे जाने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक दायरे से बाहर है और फिर भी अति विशिष्ट है | इस कथन को ध्यान में रखते हुए दुलारी की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए |
Answer.दुलारी विशिष्ट कहे जाने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक दायरे के बाहर है क्योंकि समाज में विशिष्ट कहे जाने वाले व्यक्तियों से इनकी कला को उचित सम्मान नहीं मिलता है और इन्हे हमेशा नीची नज़रों से देखा जाता है |दुलारी फिर भी विशिष्ट इसलिए है क्योंकि उसमे कला और हुनर है | दुलारी की चारित्रिक विशेषताएँ है-
१. दुलारी एक बहुत ही अच्छी गायिका थी, उसकी आवाज़ बहुत ही मधुर और सुरीली थी |
२. दुलारी देश के प्रति समर्पित थी क्योंकि उसने बिना सोचे फैंकू द्वारा दी हुई विदेशी साड़ियां विदेशी वस्तुओं की होली जलने के लिए दे दी थी |

३. दुलारी अपने स्वास्थ्य का बहुत ही ध्यान रखती थी जिसके लिए वह नियम से रोज़ कसरत करती थी |
४.दुलारी भले ही उच्च वर्ग की नारी नहीं थी, परन्तु वह स्वाभिमानी थी | उसने अपना सर ऊपर रखके जीना सीखा था |
५. दुलारी भले ही कठोर ह्रदय थी, पर टुन्नू के लिए उसके मन में प्रेम था, इसीलिए वह उसकी मृत्यु की खबर सुनकर बहुत ही विचलित हुई थी |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q5.दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ ?
Answer.दुलारी का टुन्नू से परिचय कजली दंगल में हुआ था जो भादों में तीज के अवसर पर आयोजित किया गया था | इस दंगल में दो वर्ग थे खोजवां बाज़ार और बजरडीहा, दुलारी खोजवां बाज़ार की प्रतिदवंद्वी थी और टुन्नू बजरडीहा की तरफ से था | दोनों ने ही प्रश्न-उत्तर करने में महानता प्राप्त करी हुई थी, टुन्नू ने दुलारी को चुनौती दी थी और दुलारी ने इस चुनौती को मुस्कुराते हुए स्वीकार किया था |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q6.दुलारी का टुन्नू को यह कहना कहाँ तक उचित था - "तै सरबउला बोल ज़िंदगी में कब देखले लोट?...!" दुलारी के इस आपेक्ष में आज के युवा वर्ग के लिए क्या सन्देश छिपा है ? उदहारण सहित स्पष्ट कीजिये |
Answer.दुलारी का टुन्नू को यह कहना उचित था - "तै सरबउला बोल ज़िंदगी में कब देखले लोट?...!" क्योंकि टुन्नू सिर्फ सोलह या सत्रह बरस का था, उसे पता नहीं था की कैसे खुद से पैसे कमाए जाते हैं, तभी दुलारी ने कहा था " तूने कहाँ ज़िंदगी में नोट देखे हैं |"
दुलारी के इस कथन में उन युवा वर्ग के लिए सन्देश छुपा है जो खुद तो कुछ नहीं करते पर बातें बहुत बड़ी-बड़ी करते हैं | इस कथन में यह भी कहा गया है की हमें उतनी ही बात करनी चाहिए जितनी सच हो क्योंकि न जाने कब सच सामने आ जाये |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q7.भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने अपना योगदान किस प्रकार दिया ?
Answer.भारत के स्वाधीनता आंदोलन में दुलारी और टुन्नू ने इस प्रकार योगदान दिया दुलारी ने स्वभिमानिता दिखते हुए जलाये जाने वाले विदेशी वस्तुओं के ढेर में विदेशी मीलों की बानी कोरी सदियों को फेंककर एक देश प्रेमी होने की मानसिकता दिखाई | टुन्नू ने अंग्रेज़ों के विरोध में हुए आंदोलन में हिस्सा लिया था और विदेशी वस्तुएं भी जलाई थी और इसी आंदोलन में उसने अपने प्राणो का बलिदान दे दिया था |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q8.दुलारी और टुन्नू के प्रेम के पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी ? यह प्रेम दुलारी को देश प्रेम तक कैसे पहुँचता है ?
Answer.टुन्नू दुलारी से प्रेम करता था परन्तु दुलारी उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करना चाहती थी | दुलारी को लगता था की उसका प्रेम बस एक नादानी है जो समय साथ ख़त्म हो जाएगी, इसीलिए वह हमेशा उसका निरादर करती रहती थी |दोनों के बीच में उनका कलाकार मन उनकी कला थी | परन्तु दुलारी जानती थी टुन्नू का प्रेम शारीरिक नहीं आत्मा से है तब भी दुलारी उसके प्रेम को स्वीकार नहीं करती थी | अंग्रेज़ों के द्वारा निर्दयी रूप से टुन्नू की हत्या होने पर दुलारी के मन में देश प्रेम की भावना जागती है इसीलिए वह टुन्नू की दी हुई साड़ी पहनकर उसके मृत्यु स्थान पर जाती है | यही घटना दुलारी को देश प्रेम तक पहुँचती है |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q9.जलाये जाने वाले विदेशी वस्त्रों में अधिकांश वस्त्र फटे पुराने थे परन्तु दुलारी द्वारा विदेशी मिलों में बानी कोरी साड़ियों का फेंका जाना उसकी किस मानसिकता को दर्शाता है ?
Answer.विदेशी वस्तुओं की होली जलने के लिए एक टोली विदेशी वस्त्र इकठ्ठा कर रही थी अधिकतर लोगों ने फटे पुराने कपडे दिए थे परन्तु दुलारी ने कोरी साड़ियां फेंकी थी | दुलारी द्वारा फेंकी हुई कोरी साड़ियां यह दर्शाता है की वह अपने देश से प्रेम करती थी, उसके लिए नयी साड़ियों का कोई मूल्य नहीं था परन्तु देश की अजादी सब कुछ थी | साड़ियों का फेंकना उसके टुन्नू के प्रति प्रेम को भी दर्शाता है क्योंकि टुन्नू ने उसको खादी की साडी भेंट की थी |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q10." मन पर किसी का बस नहीं; वह रूप या उम्र का कायल नहीं होता |" टुन्नू के इस कथन में उसका दुलारी के प्रति किशोर जनित प्रेम व्यक्त हुआ है परन्तु उसके विवेक ने उसके प्रेम को किस दिशा की ओर मोड़ा ?
Answer.टुन्नू दुलारी से सच्चा प्रेम करता था परन्तु वह दुलारी से उम्र में बहुत ही छोटा था | दुलारी को लगता था की उसका प्रेम बस एक नादानी है जो समय साथ ख़त्म हो जाएगी, इसीलिए वह हमेशा उसका निरादर करती रहती थी | टुन्नू दुलारी की आत्मा से प्रेम करता था न की उसके शरीर से, इसीलिए दुलारी को वो होली पर साडी देता है और बदले में कुछ भी नहीं मांगता |
टुन्नू का विवेक उसके प्रेम को देश भक्ति की तरफ मोड़ता है | टुन्नू अंग्रेज़ों के खिलाफ आंदोलन में हिस्सा लेता है , विदेशी वस्त्रों की होली जलने वाली टोली में भी शामिल होता है और आखिर में देश के लिए अपने प्राण दे देता है |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास

Q11.'एहि ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' का प्रतीकार्थ समझाइये |
Answer.'एहि ठैयाँ झुलनी हेरानी हो रामा!' का अर्थ है - इसी जगह पर मेरी नाक की लोंग खो गयी , में किस्से पूछू? नाक की लोंग सुहाग का प्रतीक होती है | इसका प्रतीकार्थ है की इस कहानी में टुन्नू की मृत्यु उसी स्थान पर होती है जहाँ पर उन्हें पहली बारे गाने के लिए बुलाया जाता है | मतलब यहाँ इस कथन का मतलब है की यहीं पर मेरे प्रेमी की मृत्यु हो गयी अब में उससे कैसे मिलूंगी |
Page no: 41, Block: प्रश्न अभ्यास